रॉयल्टी ५

१

आजकल रॉयल पुरुषार्थी का, रॉयल सलोगन कौन-सा है? रॉयल पुरुषार्थी, किसको कहा जाता है? रॉयल शब्द उसको थमाने के लिये कहा जाता है कि जिसको हा बात में रोयल्टी व सहज साधन चाहिए। साधनों के आधार से और प्राप्ति के आधार से पुरुषार्थ करने वाला रॉयल पुरुषार्थी कहा जाता है। रॉयल्टी का दूसरा अर्थ भी होता है। जो अब रॉयल पुरुषार्थी हैं, उनको धर्मराजपुरी में रॉयल्टी भी देनी पड़ती है। रॉयल पुरुषार्थी की निशानी क्या होती है, कि जिससे जान सको कि मैं रॉयल पुरुषार्थी तो नहीं हूँ? दूसरे को नहीं जानना है, लेकिन अपने को जानना है। जैसे स्थूल रॉयल्टी वाले, अपने अनेक रुप बनाते हैं, वैसे रॉयल पुरुषार्थी बहुरुपी और चतुर होते हैं, वे जैसा समय वैसा रुप धारण करेंगे। लेकिन रॉयल्टी में रीयल्टी नहीं होती, मिक्स होगा, लेकिन एक-रस स्थिति में अपने को फिक्स नहीं कर सकेंगे। ऐसे रॉयल पुरुषार्थी, खेल कौन-सा करते हैं–अप एण्ड डाउन अभी-अभी बहुत ऊंची स्टेज, अभी-

अभी सबसे नीची स्टेज। चढ़ती कला में भी हीरो पार्टधारी और गिरती कला में जीरो में हीरो। ऐसे पुरुषार्थी का कर्तव्य क्या होता है? स्वयं प्रकृति के व विकारों के वश, अल्पकाल के मायावी निर्भय रुप में रहना और अपने द्वारा दूसरों को भयभीत करने की बातें करना। उन्हों का स्लोगन क्या है–यह कर लँगा या वह कर लूँगी–आपघात महापाप की भयभीत चलन व वैसा बोल उन लोगों का कर्तव्य है। ऐसे रॉयल पुरुषार्थी कभी नहीं बनना।

कभी भी ऐसे रॉयल पुरुषार्थी के संग में नहीं आना। क्योंकि माया के वश होने वाली आत्माओं को और पुरुषार्थी बनने वाली आत्माओं को स्वयं के संग में लाकर प्रभावित करने की विशेषता माया द्वारा वरदान में प्राप्त होती है। ऐसे संग को बड़ी-तेबड़ी दलदल समझना। जो कि बाहर से तो बहुत सुन्दर लेकिन अन्दर नाश करने वाली होती है। इसलिए बाप-दादा सभी बच्चों को वर्तमान समय की, माया के रॉयल स्वरुप की सावधानी, पहले से ही दे रहे हैं। ऐसे संग से, सदा सावधान रहना और होशियार रहना। माया भी वर्तमान समय ऐसे रॉयल पुरुषार्थियों की माला बनाने में लगी हुई है।

अपने मणके बहुत अच्छी तरह से और तीव्र पुरुषार्थ से ढूँढ रही है। इसलिये माया के मणके की माला नहीं बनना। अगर ऐसे माया के मणके

के प्रभाव में आ गये, तो विजयमाला के मणकों से किनारे हो जायेंगे। क्योंकि आजकल दोनों ही मालाएँ–एक काया की और दूसरी विजयमाला बाप की, इन दोनों की सिलेक्शन बहुत तेजी से हो रही है। ऐसे समय में हर सेकेण्ड, चारों ओर अटेन्शन चाहिये। समझा?

२

ब्रह्माकुमार का अर्थ ही है सदा प्युरिटी की पर्सनैलिटी और रॉयल्टी में रहना। यही प्युरिटी की पर्सनैलिटी विश्व की आत्माओं को प्युरिटी की तरफ आकर्षित करेगी। और यही प्युरिटी की रॉयल्टी धर्मराजपुरी की रायल्टी देने से छुड़ायेगी। रायल्टी के दोनों ही अर्थ होते हैं। इसी रायल्टी के अनुसार भविष्य रायल फैमली में आ सकेंगे। तो चेक करो ऐसी रायल्टी और पर्सनैलिटी जीवन में अपनाई है। यूथ ग्रुप पर्सनैलिटी को ज्यादा बनाती है ना! तो अपनी रूहानी पर्सनैलिटी अविनाशी पर्सनैलिटी अपनाई है? जो भी देखे हरेक ब्रह्माकुमार और कुमारी से यह पर्सनैलिटी अनुभव करे। शरीर की पर्सनैलिटी वह तो आत्माओं को देहभान में लाती है और प्युरिटी की पर्सनैलिटी देही अभिमानी बनाए बाप के समीप लाती है। तो विशेष कुमार ग्रुप को अब क्या सेवा करनी है? एक तो अपने जीवन परिवर्तन द्वारा आत्माओं की सेवा, अपने जीवन के द्वारा आत्माओं को जीयदान देना। स्व-परिवर्तन द्वारा औरों को परिवर्तन करना। अनुभव

कराओ कि ब्रह्माकुमार अर्थात् वृत्ति, दृष्टि, कृति और वाणी परिवर्तन। साथ-साथ प्युरिटी की पर्सनैलिटी, रूहानी रायल्टी का अनुभव कराओ। आते ही, मिलते ही इस पर्सनैलिटी की ओर आकर्षित हों। सदा बाप का परिचय देने वाले वा बाप का साक्षात्कार कराने वाले रूहानी दप्रण बन जाओ। जिस चित्र और चरित्र से सर्व को बाप ही दिखाई दे। किसने बनाया? बनाने वाला सदा दिखाई दे। जब भी कोई वन्डरफुल वस्तु को देखते हैं वा वन्डरफुल परिवर्तन देखते हैं तो सबके मन से, मुख से यही आवाज़ निकलता है कि किसने बनाई वा यह परिवर्तन कैसे हुआ। किस द्वारा हुआ। यह तो जानते हो ना। इतना बड़ा परिवर्तन जो कौड़ी से हीरा बन जाए तो सबके मन में बनाने वाला स्वत: ही याद आयेगा।

३

बापदादा हर एक बच्चे की पवित्रता की रॉयल्टी देख रहे हैं। ब्राह्मण जीवन की रॉयल्टी है ही प्युरिटी। तो हर एक बच्चे के सिर पर रूहानी रॉयल्टी की निशानी प्युरिटी की लाइट का ताज देख रहे हैं। आप सभी भी अपने प्युरिटी का ताज, रूहानी रॉयल्टी का ताज देख रहे हो? पीछे वाले भी देख रहे हो? कितनी शोभनिक ताजधारी सभा है। है ना पाण्डव? ताज चमक रहा है ना! ऐसी सभा देख रहे हो ना! कुमारियां,

ताजधारी कुमारियां हो ना! बापदादा देख रहे हैं कि बच्चों की रायॅल फैमिली कितनी श्रेष्ठ है!

अपने अनादि रॉयल्टी को याद करो, जब आप आत्मायें परमधाम में भी रहती हो तो आत्मा रूप में भी आपकी रूहानी रॉयल्टी विशेष है। सर्व आत्मायें भी लाइट रूप में हैं लेकिन आपकी चमक सर्व आत्माओं में श्रेष्ठ है। याद आ रहा है परमधाम? अनादि काल से आपकी झलक फलक न्यारी है। जैसे आकाश में देखा होगा सितारे सभी चमकते हैं, सब लाइट ही हैं लेकिन सर्व सितारों में कोई विशेष सितारों की चमक न्यारी और प्यारी होती है। ऐसे ही सर्व आत्माओं के बीच आप आत्माओं की चमक रूहानी रॉयल्टी, प्युरिटी की चमक न्यारी है। याद आ रहा है ना?

फिर आदिकाल में आओ, आदिकाल को याद करो तो आदिकाल में भी देवता स्वरूप में रूहानी रॉयल्टी की पर्सनालिटी कितनी विशेष रही? सारे कल्प में देवताई स्वरूप की रॉयल्टी और किसी की रही है? रूहानी रॉयल्टी, प्युरिटी की पर्सनाल्टी याद है ना! पाण्डवों को भी याद है? याद आ गया?

फिर मध्यकाल में आओ तो मध्यकाल द्वापर से लेकर आपके जो पूज्य चित्र बनाते हैं, उन चित्रों की रॉयल्टी और पूजा की रॉयल्टी द्वापर से अभी

तक किसी चित्र की है? चित्र तो बहुतों के हैं लेकिन ऐसे विधि पूर्वक पूजा और किसी आत्माओं की है? चाहे धर्म पितायें हैं, चाहे नेतायें हैं, चाहे अभिनेतायें हैं, चित्र तो सबके बनते लेकिन चित्रों की रॉयल्टी और पूजा की रॉयल्टी किसी की देखी है? डबल फारेनर्स ने अपनी पूजा देखी है? आप लोगों ने देखी है या सिर्फ सुना है? ऐसे विधिपूर्वक पूजा और चित्रों की चमक, रूहानियत और किसकी भी नहीं हुई है, न होगी। क्यों? प्युरिटी की रॉयल्टी है। प्युरिटी की पर्सनाल्टी है। अच्छा देख लिया अपनी पूजा? नहीं देखी हो तो देख लेना।

अभी लास्ट में संगमयुग पर आओ तो संगम पर भी सारे विश्व के अन्दर प्युरिटी की रॉयल्टी ब्राह्मण जीवन का आधार है। प्युरिटी नहीं तो प्रभु प्यार का अनुभव भी नहीं। सर्व परमात्म प्राप्तियों का अनुभव नहीं। ब्राह्मण जीवन की पर्सनाल्टी प्युरिटी है और प्युरिटी ही रूहानी रॉयल्टी है।

तो आदि अनादि, आदि मध्य और अन्त सारे कल्प में यह रूहानी रॉयल्टी चलती रही है। तो अपने आपको देखो - दर्पण तो आप सबके पास है ना? दर्पण है? देख सकते हो? तो देखो। हमारे अन्दर प्युरिटी की रॉयल्टी कितने परसेन्ट में है? हमारे चेहरे से प्युरिटी की झलक दिखाई देती है? चलन में प्युरिटी की फलक दिखाई देती है? फलक अर्थात्

नशा। चलन में वह फलक अर्थात् रूहानी नशा दिखाई देता है? देख लिया अपने को? देखने में कितना समय लगता है? सेकण्ड ना? तो सभी ने देखा अपने को?

४

तो पवित्रता आप ब्राह्मणों का सबसे बड़े से बड़ा श्रृंगार है, इसीलिए आपके चित्रों का कितना श्रृंगार करते हैं। यह पवित्रता का यादगार श्रृंगार है। पवित्रता, सम्पूर्ण पवित्रता, काम चलाऊ पवित्रता नहीं। सम्पूर्ण पवित्रता आप ब्राह्मण जीवन की सबसे बड़े ते बड़ी प्रापर्टी है, रॉयल्टी है, पर्सनाल्टी है।

५

रॉयल फैमली में कौन आयेंगे? जो सदैव अपनी प्यूरिटी की रॉयलटी में रहते हैं। कहाँ भी हद के आकर्षण में आंख नहीं डूबती। सदा अलंकारों से सजे हुए होते हैं। सदा श्रृंगारे हुए मूर्ती, ऐसी रॉयलटी वाले रॉयल फैमली में आयेंगे। वारिस कौन बनेंगे? वारिस अर्थात् अधिकारी। तो जो यहां सदा अधिकारी स्टेज पर रहते, कभी भी माया के अधीन नहीं होते, अधिकारीपन के शुभ नशे में रहते, ऐसे अधिकारी स्टेज वाले ही वहां भी अधिकारी बनेंगे। अब हर एक को अपने आप को देखना पड़े

कि मैं कौन हूँ? यह पहेली है। किसी-किसी का सारे जीवन में साथ-साथ पार्ट भी है साथ पढ़ने का, साथ रास करने का, साथ महल में रहने का, रॉयल फैमली में भी साथ होंगे।